पूजा से गालियों तक
(14:6-20)

एक प्रचारक मित्र ने वर्णन करके बताया था कि पहली बार प्रचार करने पर उसके साथ क्या हुआ: ''पहले वर्ष, उन्होंने मुझे देवता माना। दूसरे वर्ष, उन्होंने मुझे सताया। तीसरे वर्ष, उन्होंने मुझे चूर-चूर कर दिया।'' उसे एक छोर से दूसरे छोर तक जाने में कुछ वर्ष लगे, परन्तु पौलुस को लोगों ने कुछ घण्टों में ही देवता से दुष्ट बना दिया।

प्रेरितों के काम अध्याय 14 में, हम पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा के मध्य हैं, जब पौलुस और बरनबास गलतिया के इलाके में सुसमाचार फैला रहे थे। 13:42-14:7 पर हमारे पिछले पाठ के अन्त में, यहूदियों और सरकारी अधिकारियों ने इकुनियुम में पौलुस और बरनबास पर पथराव करने का षड्यन्त्र रचा। उनकी योजना का पता चलने पर ये मिशनरी ''लुकाउनिया के लुस्त्रा और दिरबे नगरों में, और आसपास के देशों में भाग गए'' (आयत 6)। गलतिया के तीन उप-ज़िले थे: पंफूलिया, पिसिदिया, और लुकाउनिया। पहले वाले दो स्थानों को, जहां पौलुस और बरनबास ने गलतिया में प्रचार किया था, पिसिदिया के नाम से जाना जाता था।[1] अब वे दक्षिण में लुकाउनिया ज़िले में जाने के लिए निकल पड़े। ''लुकाउनिया'' का रफ़ सा अनुवाद होगा ''भेड़िया देश।'' प्रभु के ये दोनों सेवक सभ्य जगत से दूर निकलते जा रहे थे।

पौलुस और बरनबास पहले लुस्त्रा में गए,[2] जो इकुनियुम के दक्षिण-दक्षिण पश्चिम की ओर अठारह-बीस मील था। लुस्त्रा, जो कि एक अप्रसिद्ध गांव था, को स्थानीय लड़ाके कबीलों के आक्रमणों से बचाने के लिए एक रोमी कॉलोनी बनाई गई थी।

पौलुस के लम्बे मिशनरी जीवन में लुस्त्रा के अनुभव बहुत कष्टदायक थे। पौलुस ने तीमुथियुस (लुस्त्रा के एक निवासी[3]) को पत्र लिखकर ''ऐसे दुखों ...'' के बारे में बताया ''जो अन्ताकिया और इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझ पर पड़े थे'' (2 तीमुथियुस 3:11)। कुरिन्थियों के नाम पत्र लिखते हुए, उसने यह उल्लेख किया कि एक बार उस पर पथराव हुआ था (2 कुरिन्थियों 11:23-26); और यह पथराव लुस्त्रा में ही हुआ था। बाद में जब उसने गलतिया में रहने वाले भाइयों को लिखा, तो उसने कहा, कि ''... मैं यीशु के दागों को अपनी देह में लिए फिरता हूं'' (गलतियों 6:17)। उन ''दागों'' में वे भयानक दाग भी थे जो नुकीले पत्थरों से बने थे जिनसे लुस्त्रा में उसकी देह को कूटा गया था।

इस पाठ में, हम देखेंगे कि कैसे पौलुस को पूजा से लेकर गालियां तक सहनी पड़ीं, और उसने यह सब कैसे सहा। इस पाठ को तैयार करते समय, मुझे इसमें अपने जीवनों में समानता देखने के लिए काफ़ी मेहनत करनी पड़ी, क्योंकि हम में से कई लोगों को वैसी

ही ज्यादतियों का सामना करना पड़ेगा जो लुस्त्रा में पौलुस को सहनी पड़ी थीं। इस पाठ के लिए बहुत सी तुलनाएं मेरे मन में आईं: जैसे कि विजय और पराजय, सफलता और असफलता, स्वीकृति और अस्वीकृति। अन्त में मैंने ''पूजा'' और ''गाली'' शब्दों को ही चुना जो सम्पूर्ण समानताएं तो नहीं हैं, परन्तु शायद हमारे अपने जीवनों में अत्यधिक संकट आने पर किसी न किसी रूप में हम पर लागू होती हों।

उपलब्धि (14:6, 7)

पौलुस और बरनबास सुसमाचार का प्रचार करने के लिए अन्ताकिया से भाग गए और उन्होंने इकुनियुम से बड़ी मुश्किल से जान बचाई थी। इससे वे परमेश्वर द्वारा दिए गए कार्य करने से पीछे नहीं हटे। लुस्त्रा में पहुंचकर (आयत 6), वे ''वहां सुसमाचार सुनाने लगे'' (आयत 7)।

हमें लुस्त्रा में किसी आराधनालय के बारे में पढ़ने को नहीं मिलता। कुछ यहूदी वहां रहते थे (16:1; 2 तीमुथियुस 1:5), परन्तु स्पष्ट है कि उनकी संख्या इतनी नहीं थी कि आराधनालय बना पाते।[4] पौलुस और बरनबास पहले आराधनालय में नहीं जा सके (जैसे उनकी आदत थी), इसलिए स्पष्ट है कि उन्होंने खुले में प्रचार किया। यह सम्भवत: नगर के द्वारों के अन्दर ही एक खुला, विशाल क्षेत्र था (इस प्रकार का क्षेत्र अधिकतर नगरों की पहचान होता था)।

परमेश्वर ने यीशु का प्रचार करने पर, दोनों के प्रयासों को आशीष दी। बाद में, हम लुस्त्रा के ''चेलों'' के बारे में पढ़ेंगे (14:20) और उसके बाद, यह भी पढ़ेंगे कि वहां प्रभु की कलीसिया की स्थापना हो गई (14:21, 23)।

हम थोड़ी देर बाद देखेंगे कि भीड़ ने कैसे पहले पौलुस और फिर बरनबास की पूजा की और अन्त में उन्हें मार डालने की कोशिश की, इसलिए हमारे लिए इन तथ्यों को स्थापित करना आवश्यक है कि संसार किसी का न्याय कैसे भी क्यों न करे, यदि वह व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा को पूरा करता है, तो यह उसकी सफलता है! दूसरी ओर संसार किसी पर फूलों की बौछार भी करे, परन्तु यदि उसका मन परमेश्वर की ओर नहीं है, तो वह व्यक्ति एक घृणित असफलता है। पौलुस और बरनबास हर हाल में चाहे उन्हें कुछ भी हो जाए परमेश्वर द्वारा दी गई अपनी सेवा को पूरा करने का दृढ़ निश्चय किए हुए थे!

पूजा (14:8-18)

एक दिन जब पौलुस लुस्त्रा में, यीशु की बातें बता रहा था, तो ''... एक मनुष्य बैठा था,... वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था''[5] (आयतें 8, 9)। इस मनुष्य के बारे में लूका ने बताया कि वह ''पांवों का निर्बल था: वह जन्म से लंगड़ा था, और कभी न चला था'' (आयत 8)।[6] हमें अध्याय 3 में पतरस द्वारा एक लंगड़े भिखारी को चंगा किए जाने वाली घटना याद आती है।[7] हमें यह नहीं बताया गया कि लुस्त्रा में रहने वाला मनुष्य भिखारी था या नहीं; शायद वह भिखारी ही था।

पौलुस ने ध्यान दिया कि वह लंगड़ा मनुष्य ध्यान लगाकर सुन रहा था। पौलुस ने मुड़कर उस आदमी की ''ओर टकटकी'' लगाकर देखा[8] ''कि इसको चंगा हो जाने का विश्वास है'' (आयत 9)। प्रेरितों अध्याय 3 वाले लंगड़े व्यक्ति और इस लंगड़े व्यक्ति में एक चौंकाने वाला अन्तर है। हमें प्रेरितों अध्याय 3 वाले भिखारी में चंगा होने से पहले यीशु में विश्वास का कोई संकेत नहीं मिलता (और हर संकेत है कि उसका विश्वास नहीं था[9]), जबकि इस लंगड़े आदमी में ''चंगा हो जाने का विश्वास'' था। कई बार आश्चर्यकर्मों के सम्बन्ध में प्राप्तकर्त्ता के विश्वास का उल्लेख होता है; और कई बार नहीं। लेकिन आश्चर्यकर्म करने वाले का विश्वास होना हमेशा अनिवार्य होता था (मत्ती 17:19, 20; मरकुस 16:14, 17); जिस पर आश्चर्यकर्म होना होता था उसमें विश्वास हो या न हो। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने सही कहा, कि ''इस विचार का शास्त्र में कोई रूप नहीं मिलता कि विश्वास ही ने पौलुस को सम्पूर्ण बनाने के *योग्य* करना था।''

इस मनुष्य को विश्वास कहां से आया? वहीं से जहां से हम सब को आता है, अर्थात परमेश्वर के वचन से (14:9; रोमियों 10:17)। पौलुस ने मसीह की बातें करते हुए, उस चंगाई का वर्णन किया होगा जो यीशु ने की थी (10:38)। पौलुस ने उस चंगाई की बात भी की होगी जिसे करने के लिए यीशु ने उसे योग्य बनाया था (14:3)।

लंगड़े आदमी के विश्वास के विषय को छोड़ने से पहले, हमें ध्यान देना चाहिए कि मूल यूनानी भाषा में यहां ''यह देखकर कि उसे *उद्धार* पाने का विश्वास था'' है। संदर्भ की रोशनी में, बहुत से अनुवादकों का मानना है कि इसका अर्थ *शारीरिक* ''उद्धार'' है; इसलिए वे शब्द ''उद्धार पाया'' का अनुवाद ''चंगाई पाया'' के लिए करते हैं। तथापि, यह सम्भव है, कि पौलुस ने देखा कि उस मनुष्य का विश्वास यीशु में *आत्मा* के उद्धार में था और पौलुस ने उसे यह दिखाने के लिए चंगा किया कि यीशु शरीर और आत्मा दोनों को चंगा कर सकता है।[10]

प्रेरित पौलुस द्वारा की गई चंगाई का यह पहला *लिखित* आश्चर्यकर्म है, परन्तु यकीनन ही यह उसके आश्चर्यकर्मों में पहला नहीं था। वह एक प्रेरित था और ''प्रेरित के सभी चिह्न'' उसमें थे (2 कुरिन्थियों 12:12)। हम उसे एक जादूगर को शाप देते हुए देख चुके हैं (13:11)। इकुनियुम में प्रभु ने पौलुस और बरनबास ''के हाथों से चिह्न और अद्भुत काम करवाकर अपने अनुग्रह के वचन पर गवाही'' दी (14:3)। इसलिए, पौलुस ने इस स्थिति को एक अनुभवी सैनिक की तरह लिया। उसने भीड़ का ध्यान आकर्षित करने के लिए ''ऊंचे शब्द से कहा'' (आयत 10क)। वह यह सुनिश्चित करना चाहता था कि उसके संदेश की पुष्टि करने के लिए आश्चर्यकर्म से एक अपेक्षित प्रभाव पड़ा है।

पौलुस ने लंगड़े आदमी से कहा, ''अपने पांवों के बल सीधा खड़ा हो'' (आयत 10ख)। जब पतरस ने भिखारी से कहा था, कि ''यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर!'' तो उसने उस अविश्वासी आदमी को दाहिने हाथ से पकड़कर उठाया था (3:6, 7)। पौलुस को लुस्त्रा में विश्वास से भरपूर इस आदमी को छूने की आवश्यकता नहीं

थी। तुरन्त, उस आदमी ने अपने विश्वास पर कार्य किया और ''उछलकर चलने फिरने लगा'' (14:10ग)!

पौलुस ने लोगों को विश्वास दिलाने के लिए आश्चर्यकर्म किया था कि वह और बरनबास परमेश्वर के भेजे हुए *संदेशवाहक* थे। इसके विपरीत, आश्चर्यकर्मों से उत्तेजित भीड़ को यह विश्वास हो गया कि वे तो *देवता* हैं। ''लोगों ने पौलुस का यह काम देखकर'' (आयत 11क), उत्तेजित होते हुए, अपनी स्थानीय भाषा में अपनी धार्मिक आस्था को त्याग दिया। उन्होंने ''लुकाउनिया की भाषा में ऊंचे शब्द से कहा; देवता मनुष्य के रूप में होकर हमारे पास उतर आए हैं। और उन्होंने बरनबास को ज्यूस, ... कहा''[11] (आयतें 11ख, 12क)। यूनानी दंत कथाओं में, ज्यूस प्रधान देवता होता था। इस तथ्य से कि बरनबास को ज्यूस कहा गया था, संकेत मिल सकता है कि वह पौलुस की तुलना में अधिक प्रभावशाली दिखाई देता था (2 कुरिन्थियों 10:10)। उन्होंने, पौलुस को ''हिरमेस कहा, क्योंकि यह बातें करने में मुख्य था'' (आयत 12ख)। यूनानी दंत कथा के अनुसार, हिरमेस देवताओं का संदेशवाहक था।[12] पौलुस छोटा होने के बावजूद[13] ऊर्जा से भरा हुआ, एक ऐसा वक्ता था जो थकता नहीं था, वह ओलम्पिस पर्वत से आने वाले फुर्तीले संदेशवाहक की उनकी धारणा के लिए पहले से तैयार था।

यह समझने के लिए कि लुस्त्रा के लोग चकित करने वाले अपने निर्णयों पर क्यों उछले, हमें उस क्षेत्र के बारे में कुछ ज्ञान होना आवश्यक है। जैसे कि सुझाव दिया गया है, दो सुसमाचार प्रचारक खोए हुए लोगों के साथ उनकी इच्छा के अनुसार व्यवहार नहीं कर रहे थे। लुस्त्रा में, उनका सामना अशिक्षित, अन्धविश्वासी लोगों से हुआ।[14] *द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़* में रिचर्ड ओस्टर के अनुसार एक प्राचीन दंत कथा पर विश्वास किया जाता था:

> दंत कथा याद दिलाती है कि जुपीटर (ज्यूस) और मरकरी (हिरमेस) कैसे नाशवान मनुष्य का रूप धारण कर फ्रूगिया के गांव (लुस्त्रा फ्रूगिया में ही था[15]) गए। वे किसी के घर मेहमान बनना चाह रहे थे, परन्तु उन्हें हज़ारों लोगों ने ठुकरा दिया परन्तु एक बाउसिस और फिलेमोन की निर्धन दम्पती ने यह जाने बिना कि वे देवता मनुष्यों के रूप में थे, उन्हें अपने घर में रखा। उन्होंने अज्ञानता में देवताओं की सेवा की थी, इसलिए उन्हें पुरस्कार मिला और बाकी सबका [जल प्रलय में] नाश हो गया।

लुस्त्रा के लोगों ने वही गलती दोबारा न करने का दृढ़ निश्चय किया था! इस बार उन्होंने उन दो देवताओं को धूमधाम और समारोह के साथ स्वीकार करना था जिसके वे हकदार थे!

वे विशेषकर इसलिए उत्तेजित थे क्योंकि ज्यूस लुस्त्रा का संरक्षक देवता था। जश्न के बीच ही, स्थानीय पुरोहित उपयुक्त बलिदान ढूंढ़ने के लिए कहीं चला गया। फिर, ''ज्यूस के मन्दिर का पुजारी जो उन के नगर के साम्हने था,[16] बैल और फूलों के हार फाटकों पर[17] लाकर लोगों के साथ बलिदान करना चाहता था'' (आयत 13)। बलिदान किए जाने वाले बैलों को सजाया गया था। उनके सींगों को चमकाया गया था, और गर्दनों

में[18] फूलों के हार[19] डाले गए थे। फिर इन जानवरों को मारकर पकाया गया और उन्होंने उसे खाया। लोग, पौलुस और बरनबास को आदरणीय अतिथियों के रूप में आदर देने के लिए एक भव्य समारोह की तैयारी कर रहे थे!

यदि पौलुस और बरनबास की जगह आप और मैं होते तो क्या करते? क्या हम उनकी श्रद्धांजलि स्वीकार करने के प्रलोभन में आ जाते? इतिहास ऐसे लोगों की कहानियों से भरा पड़ा है जिन्होंने अन्धविश्वासी लोगों द्वारा उनको ''देवता'' का नाम दिए जाने पर उसे प्रसन्नतापूर्वक मान लिया।[20] इन मिशनरियों ने युक्तिसंगत व्याख्या प्रस्तुत की होगी कि हो सकता है, कि ''यदि हम इनके सम्मान को स्वीकार करते हैं, तो ये लोग सुसमाचार को अधिक आसानी से मान लेंगे।'' उन्होंने इस तर्क पर भी विचार किया होगा कि, ''यदि हम उनका आतिथ्य स्वीकार *नहीं* करते, तो हो सकता है वे नाराज़ हो जाएं और हम उन्हें मसीह में लाने का अवसर खो बैठें।''

पूजा करवाने का इन दो लोगों ने कोई बहाना नहीं ढूंढ़ा। बल्कि, ''बरनबास और पौलुस[21] प्रेरितों[22] ने जब सुना, तो अपने कपड़े फाड़े, और भीड़ में लपक गए, और पुकारकर कहने लगे'' (आयत 14)। लूका ने हमें यह नहीं बताया कि पौलुस और बरनबास ने ''यह कैसे सुना।'' शायद उन्हें लुकाउनी भाषा समझ नहीं आती थी[23] और जब तक उन्होंने पुजारी को बैलों के साथ आते न देखा उन्हें तब तक इसका अहसास नहीं हुआ कि यह सब क्या हो रहा था। हो सकता है कि आश्चर्यकर्म के शीघ्र बाद वे वहां से चले गए हों और जब तक भीड़ ने उन्हें ढूंढ़कर बलिदान तैयार न कर लिया तब तक उन्हें उनकी प्रतिक्रिया के बारे में कुछ भी पता न चला हो।[24]

परन्तु, जब इन प्रचारकों को इसका पता चल गया, तो उन्होंने भयभीत होकर ''अपने कपड़े फाड़े।'' अपने कपड़े फाड़ना शोक और घबराहट को दिखाने का प्राचीन यहूदी ढंग था।[25] कपड़े को गले से ज़ोर से पकड़कर विपरीत दिशाओं में खींच कर, नीचे की ओर फाड़ते हुए, छाती दिखाई जाती थी। यह कार्य अपने अन्दर की भावनाओं को दिखाने के लिए हृदय को नंगा करने का प्रतीक था। मैक्गर्वे ने टिप्पणी की:

> अचानक और प्रबल विरोध करने के लिए अपने कपड़े फाड़ने का ढंग... बाइबल में... यहां अन्तिम बार दिखाई देता है। जिस शांति की मसीही विश्वास [शिक्षा देता है] और बात करता है उसने इसे मसीही यहूदियों की प्रथाओं से निकाल दिया है।[26]

अपने कपड़े फाड़ने के बाद, पौलुस और बरनबास चिल्लाते हुए, भीड़ की ओर लपके और कहने लगे:

> ... हे लोगो तुम क्या करते हो? हम भी तो तुम्हारे समान दु:ख-सुख भोगी मनुष्य हैं,[27] और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं,[28] कि तुम इन व्यर्थ वस्तुओं [अर्थात, मूर्तियों[29]]

से अलग होकर जीवते परमेश्वर[30] की ओर फिरो,[31] जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है, बनाया[32] (आयतें 14ख, 15)।

उनके शब्द भीड़ को रोकने के लिए थे ताकि वे उनसे बात कर सकें। वस्तुत:, उन्होंने कहा, कि ''तुम्हारे मूर्तियों के देवताओं के रूप में उपासना करवाने के स्थान पर, हम तुम्हें इस प्रकार के देवताओं *से* अर्थात झूठी और बेजान मूर्तियों से सच्चे और जीवते परमेश्वर की ओर मोड़ने आए हैं!''

15 से 17 आयतों में ''किसी मूर्तिपूजक श्रोता को पौलुस का यह पहला लिखित प्रवचन'' दिया गया है। मुझे इसमें संदेह है कि पौलुस और बरनबास ने स्तब्ध करने वाले अपने विरोध को प्रवचन माना हो![33] परन्तु, इन शब्दों और अथेने में एक और मूर्तिपूजक भीड़ को कही गई बातों में समानताएं हैं (प्रेरितों 17:22-31)। इन तीन आयतों में, हमें सम्भवत: यह आधार मिलता है कि पौलुस और बरनबास मूर्तिपूजक श्रोताओं के पास कैसे पहुंचे।

एक शिक्षक को वहीं से आरम्भ करना चाहिए जहां पर उसके सुनने वाले हों, वहां से नहीं जहां से उसकी अपनी इच्छा है। जब पौलुस ने पिसिदिया के अन्ताकिया में आराधनालय में प्रचार किया, तो उसका यह प्रचार पुराने नियम के वचनों पर था (13:16-41)। लुस्त्रा में, उसे ऐसे लोग मिले जो वचन को नहीं जानते थे। परमेश्वर के लिखित प्रकाश से आरम्भ करने के बजाय, उसने परमेश्वर के प्राकृतिक प्रकाश से आरम्भ करना था।[34] इसका अर्थ यह नहीं कि पौलुस और बरनबास ने शास्त्र को नज़रअन्दाज कर दिया था। उनकी बातें बाइबल के विचार और सिद्धांत में गढ़ी हुई थीं।

मिशनरियों ने प्रकृति की बात से आरम्भ किया जिसे भीड़ अपने आस-पास देख सकती थी और उसकी अर्थात ''जीवते परमेश्वर की जिसने आकाश और धरती और समुद्र, और सब कुछ जो उनमें है बनाया'' बात की। फिर उन्होंने कहा, कि ''उस ने बीते समयों से सब जातियों को अपने-अपने मार्गों में चलने दिया'' (आयत 16; देखिए 17:30)। इसका यह अर्थ नहीं कि परमेश्वर ने उस सब की जो उन्होंने किया, स्वीकृति दे दी थी, जिसमें उनका मूर्तिपूजा में जाना शामिल है (रोमियों 1:18-32)। बल्कि, इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने उन्हें वह सब करने में अगुआई नहीं दी जिस प्रकार से उसने इस्राएलियों को दी थी।

''तौभी,'' प्रचार में उन्होंने जोड़ा कि, ''उस ने अपने आप को बे-गवाह न छोड़ा; किन्तु वह भलाई करता रहा, और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर, तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा'' (आयत 17)। हो सकता है कि अन्यजातियों को पुराने नियम का शास्त्र न मिला हो, परन्तु जो आशिषें उन्हें मिली थीं (जिसमें आकाश से वर्षा, रंगबिरंगे मौसम, और जो भोजन उन्होंने खाया) उससे उनके मन सच्चे परमेश्वर की ओर फिर जाने चाहिए थे (रोमियों 1:19, 20)।[35]

भीड़ को पौलुस और बरनबास के तर्क पूरी तरह से समझ नहीं आए थे। आयत 18 कहती है, कि ''यह कहकर भी उन्होंने लोगों को कठिनता से रोका कि उनके लिए बलिदान न करें।'' किसी ने सुझाव दिया है कि हो सकता है पौलुस की वाक्पटुता ने कुछ लोगों के मनों में पहले से ही यह पक्का कर दिया हो कि वह वास्तव में देवताओं का संदेशवाहक था! परन्तु, लोगों को कम से कम यह बात तो समझ आ ही गई होगी कि इन दो पुरुषों ने उनके बलिदानों को ठुकरा दिया था।।

थोड़ी देर बाद आने वाले दृश्य को समझने के लिए अपने आप को भीड़ के स्थान पर रखिए। वे इन दो अजनबियों को उच्चतम सम्मान देने के लिए नमन करने आए थे, परन्तु उन्हें खाली मोड़ दिया गया था। सम्भवत: पुजारी वहां, घबराया हुआ, इस आश्चर्य में खड़ा था कि इन माला पहने दो बड़े बैलों का क्या किया जाए।[36] उन लोगों की कल्पना कीजिए जो पुकार रहे थे, कि ''देवता मनुष्यों के रूप में होकर हमारे पास उतर आए हैं,'' अब वहां से सिर झुकाए निकलते हुए, अपने आप को ठगे हुए से महसूस कर रहे थे। पौलुस और बरनबास ने उस दिन कोई मित्र नहीं बनाया।

परमेश्वर का दान पाए हुए दासों के लिए चापलूसी शैतान का बहुत चालाकी भरा फंदा है। किसी भी व्यक्ति में कुछ कर सकने की क्षमता होने पर चाहे वह शिक्षा देने और प्रचार करने की ही क्यों न हो, उसकी सफलता को मान्यता दी जाएगी; उसकी प्रशंसा होगी। यदि वह प्रशंसा को स्वीकार कर लेता है, तो वह न केवल अपने आप को बहुत ऊंचा समझने लगेगा, बल्कि लोगों का ध्यान प्रभु से हटाकर अपनी ओर भी लगाएगा। दूसरी ओर, यदि वह जय जयकार करवाने को नकार देता है, तो वह अपने चाहने वालों के लिए पराया होने का जोखिम ले रहा होता है।

हम में से किसी में भी पौलुस के गुण नहीं हैं, और न ही किसी को बरनबास की तरह ज्यूस कहलाने के प्रलोभन का सामना करना पड़ेगा। फिर भी, हम में बहुत से लोगों ने थोड़ी बहुत सफलताएं तो पाई हैं। आइए हर हाल में परमेश्वर को महिमा देना सीखें, चाहे उसकी कीमत कुछ भी क्यों न चुकानी पड़े।

गाली (14:19, 20)

कुछ देर बाद, ''कितने यहूदियों ने अन्ताकिया और इकुनियुम से आकर ...'' (आयत 19क)। मेरा अनुमान है कि ये यहूदी बलिदान की पूर्ण असफलता[37] के थोड़ी देर बाद आए। उनके चेहरे अभी भी लाल ही थे, भावनाएं अभी संवेदनशील ही थीं, जज़्बात अभी भी भड़के हुए ही थे। आपको याद होगा कि यहूदियों ने पौलुस और बरनबास को अन्ताकिया से भगा दिया था, और यहूदियों ने इकुनियुम में उन पर पथराव करने का षड्यन्त्र रचा था। अब वे यहूदी इन दो प्रचारकों को सताने के लिए लुस्त्रा में पहुंच गए थे।[38] (अन्ताकिया से आने वालों को एक सौ मील से अधिक सफ़र करना पड़ा था!) शिकारी शाऊल अब शिकार पौलुस बन चुका था!

आयत 19 यह टिप्पणी करती है, कि वहां पहुंचने के बाद, उन्होंने ''कितने ... लोगों

को अपनी ओर कर लिया।''[39] मैक्गर्वे का सुझाव है कि उनके झूठ और अधूरे सच कुछ इस प्रकार रहे होंगे:

> हम जानते हैं कि तुमने हमारे देश के इन दो पुरुषों को मनुष्य के रूप में देवता मान लिया है। हम तुम्हें बता सकते हैं कि वे कौन हैं। वे यहूदी हैं जिन्होंने अन्ताकिया में आकर इतना नीच काम किया... जिसके कारण नगर में रहने वाले इनके सभी यहूदी साथियों को क्रोध आया, और इसलिए नगर की आदरणीय महिलाओं तथा प्रधानों ने उठकर इन्हें वहां से भगा दिया है। फिर वे इकुनियुम में चले गए, और अपने आप को इस प्रकार दुखी बनाया कि शहर के हाकिमों ने, यहूदियों और गैर-यहूदियों के साथ मिलकर, उन पर पथराव करने की तैयारी की और वे चोरों की नाईं भाग कर लुस्त्रा में आ गए। हम उन्हें अपना और अपने देश का नाम बदनाम नहीं करने देना चाहते, और हम आपकी अनुमति से उनकी जादूगरी का खात्मा कर देंगे; क्योंकि ये जो अचम्भे काम लोगों के बीच करते हैं, दुष्टात्माओं की शक्ति से ही करते हैं।

ऊपर दिए गए अन्तिम तर्क से अन्धविश्वासी लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा होगा। जब लुस्त्रा के लोगों को लगा कि देवता उनके नगर में आ गए हैं, तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। परन्तु, इस बात ने, कि दुष्टात्माएं लुस्त्रा में आ गई थीं, उन्हें आतंक से भर दिया होगा।

उत्तेजित भीड़ की सहानुभूति पाने के बाद, वे लोगों को भड़काने वाले पौलुस को ढूंढ़ने लगे।[40] लुस्त्रा के लोगों ने बरनबास को उसके पहरावे के कारण अति महत्वपूर्ण समझा था, परन्तु अन्ताकिया और इकुनियुम से आए यहूदी पौलुस को जानते थे जो उनके धर्म के लिए सबसे बड़ा ख़तरा था। एक बार पहले भी उन्होंने उस पर पथराव करने की कोशिश की थी, परन्तु वह बच निकला था (14:5, 6)। इस बार शायद बाज़ार में प्रचार करते हुए उन्होंने अवश्य ही उसे हैरान कर दिया था। मैं कल्पना कर सकता हूं कि नुकीले पत्थर उसकी ओर फेंककर किस प्रकार से उन्होंने उसे तेज़ी से घेर लिया होगा।[41]

जब पत्थर पौलुस की मांसपेशियों को चीर रहे थे और उसकी हड्डियों को बिखरा रहे थे तो उस वक्त उसके मन में क्या आ रहा होगा? इसमें कोई संदेह नहीं, कि कुछ वर्ष पूर्व का ऐसा ही एक दृश्य उसकी आंखों के सामने आया होगा, जब उसने स्तिफनुस की देह में से प्राण को रौंदते हुए देखा था। उसके मन में यह भी विचार आया होगा, ''मेरा इस प्रकार से मरना कितना कष्टदायक है परन्तु कितना उचित भी।''

अन्ततः, पौलुस का कुचला हुआ शरीर लहू के कुण्ड में अभी तक पड़ा है। लोग धूल और गन्दगी में उसकी देह को ऊबड़-खाबड़ सड़क पर घसीटते हुए, बाहों और टांगों से खींचते हुए नगर के बाहर एक जगह तक ले गए। वहां उन्होंने गिद्धों और जंगली जानवरों के लिए दावत के रूप में उसकी देह फेंक दी। आयत 19 के अन्त में कहा गया है, कि उन्होंने ''पौलुस को पत्थरवाह किया, और मरा समझकर उसे नगर के बाहर घसीट ले गए।''

आप में से कइयों के साथ भी वैसा ही हो सकता है जैसा पौलुस के साथ हुआ था। आप भी, उन लोगों को जानते हैं जो तब तक आपकी प्रशंसा करते थे जब तक किसी

ने आकर उनके मनों में विष नहीं घोला था; फिर उन्होंने आपको शायद भौतिक और भावनात्मक गालियां दीं। यह भी हो सकता है उन्होंने आपको ''मरा'' छोड़कर अपने जीवनों में से ''घसीट दिया'' हो। इस प्रकार की परिस्थिति का सामना कैसे किया जाता है? इसे जारी रखते हुए, देखें कि आपको कुछ संकेत मिल सकते हैं जिन्हें पौलुस ने इस दुर्व्यवहार का सामना करने के लिए इस्तेमाल किया था।

कुछ देर बाद लुस्त्रा में नए मसीही सावधानीपूर्वक नगर के बाहर आए और पौलुस की देह को घेरे में ले लिया।[42] शास्त्र केवल इतना ही कहता है कि ''चेले उसकी चारों ओर आ खड़े हुए'' (आयत 20क)। उनके दुख और अनिश्चितता की कल्पना करना कठिन नहीं है। लूका ने चेलों का नाम नहीं दिया, परन्तु हो सकता है कि उनमें लोइस नामक नानी, यूनीके नामक माता, और तीमुथियुस नामक नौजवान भी हो।[43] बाद में, पौलुस ने तीमुथियुस को यह कहते हुए लिखा, ''... मैं ...अपनी प्रार्थनाओं में तुझे लगातार स्मरण करता हूं। और तेरे आंसुओं की सुधि कर करके तुझ से भेंट करने की लालसा रखता हूं...'' (2 तीमुथियुस 1:3, 4)। शायद उसने एक नवयुवक लड़के[44] से उसके आत्मिक नायक की खून से लथपथ और मारी-कूटी देह पर आंसुओं की बात की थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि नगर के लोगों की तरह, चेलों को भी लगा था, कि पौलुस मर गया है।

क्या पौलुस सचमुच मर गया था और प्रभु ने उसको फिर से जीवन दिया? हम नहीं जानते। कई लोगों का विचार है कि यह तब की बात है जब पौलुस ''तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया'' था (2 कुरिन्थियों 12:2)। पुनरुत्थान हुआ था या नहीं, परन्तु यह कहानी परमेश्वर के सामर्थ से भरी पड़ी है। अगले ही दिन, यही व्यक्ति जो मृत्यु के द्वार पर था, साठ मील चलने के लिए निकल पड़ा!

पौलुस ने होश में आने के बाद क्या किया? आयत 20 कहती है, कि ''वह उठकर नगर में गया... ।''[45] नगर में? वहां तो उसके शत्रु थे! वहीं पर तो लोगों ने उसके जीवन का अन्त करने की कोशिश की थी! शायद पौलुस ने सोचा कि उसे अपने शत्रुओं के पास कुछ प्रमाणित करना चाहिए और नये मसीहियों को कुछ दिखाना चाहिए। पौलुस ने बाद में तीमुथियुस को लिखा:

> क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर *सामर्थ,* और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है। इसलिए हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूं, लज्जित न हो, पर उस *परमेश्वर की सामर्थ* के अनुसार सुसमाचार के लिए मेरे साथ दुख उठा (2 तीमुथियुस 1:7, 8)।

तीमुथियुस के लिए ये केवल बातें ही नहीं थीं; वह पौलुस के जीवन में इनकी प्रामाणिकता देख चुका था।

एक बार फिर, चेलों के प्रत्युत्तर की कल्पना करना कठिन नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं कि पौलुस के घावों को धोते और मरहम पट्टी करते हुए, उसके प्रियजन रात भर उसकी

सेवा करते रहे, जबकि सांत्वना भरी बातें उसे दिलेर करती थीं।[46] अगली सुबह, अपने भाइयों और अपने परमेश्वर से दिलेरी पाकर, पौलुस बरनबास के साथ दक्षिण-पूर्व की लम्बी यात्रा पर, दिरबे नाम के एक छोटे से नगर की ओर चल दिया (आयत 20ग)।

अपना पाठ समाप्त करने से पहले, आइए उन कई बातों को देखें जो अपने मार्ग में आने वाली बुराई का सामना करने के लिए पौलुस ने कीं और जो नहीं कीं। पहला, उसने अपने आप को प्रशंसा मिलने पर घमण्डी होकर कड़वा बनने की बुराई की अनुमति नहीं दी। दूसरा, उसने बुराई करने वालों का सामना तुरन्त किया। तीसरा, वह अपने भाइयों पर निर्भर रहा; उसका उनके साथ निकट सम्बन्ध था। चौथा, उसने इसे जीवन पर नहीं छोड़ा; वह उसी काम को करता रहा जो परमेश्वर ने उसे करने के लिए दिया था। पांचवां, उसने उस बुराई का सामना अपनी शक्ति के साथ करने का प्रयास नहीं किया, बल्कि परमेश्वर पर निर्भर रहा। बाद में, अपने "सताए जाने ... और दुखों" के बारे में लिखते हुए जो "लुस्त्रा में [उस] पर पड़े थे," उसने कहा कि "*प्रभु ने* मुझे उन सब से छुड़ा लिया" (2 तीमुथियुस 3:11)। यहां हर उस व्यक्ति के लिए सबक है, जिस पर बुराई आई हो या उसका गलत उपयोग हुआ हो।

सारांश

मैंने अभी उस "भेद" की बात नहीं की कि पौलुस ने उस प्रशंसा तथा बुराई का जो उसे मिली थी, कैसे सामना किया और आप कैसे उस भलाई या बुराई का सामना कर सकते हैं जो जीवन में आप पर आए। मेरा विश्वास है कि पौलुस ने उन कलीसियाओं को लिखकर जो लुस्त्रा और गलतिया के अन्य नगरों में मिलती थीं, हमें वह रहस्य बताया कि "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया" (गलतियों 2:20)। पौलुस मर गया था; परन्तु मसीह उसमें जी रहा था! आप एक मरे हुए व्यक्ति की महिमा करके उसे घमण्डी नहीं बना सकते; आप एक मरे हुए व्यक्ति की बुराई करके उसका स्वाभिमान खत्म नहीं कर सकते।

मेरा अनुभव यह रहा है कि हमारी प्रशंसा अक्सर तब होती है जब हमारे अन्दर वह योग्यता नहीं होती और बुराई तब होती है जब हम उसके योग्य नहीं होते। मैं ऐसी बातों की चिन्ता न करने की कोशिश करता हूं। फिर भी, यदि आप अपने आप को अहंकार और निराशा में झूलते हुए पाएं, तो गलतियों 2:20 को एक काग़ज पर लिख लें और उसे अपनी जेब में रखें। जब तक पौलुस का दर्शन आप के विचार का एक भाग नहीं बन जाता तब तक दिन में उसे कई बार बाहर निकालकर पढ़ते रहें।

परमेश्वर हम सब की यह अहसास करने में सहायता करे कि सच्ची सफलता उसकी इच्छा को पूरा करना है और सच्चा धन उसके साथ हमारे सम्बन्ध हैं। उसके सामर्थ के द्वारा जहां तक सम्भव हो सके, प्रशंसा और बुराई से हम अप्रभावित रहें।

विज़ुअल-एड नोट्स

यदि आपके इलाके में फूल बेचने वाले हों (अपनी सेवा की तीव्रता पर ज़ोर देने के लिए) जो हिरमेस/मर्करी का इस्तेमाल करते हैं [रोमी लोगों के एक देवता का नाम], तो आप हिरमेस/मर्करी को ''देतताओं के संदेशवाहक'' कहते समय विज़ुअल-एड के रूप में उनके विज्ञापन का उपयोग कर सकते हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]इकुनियुम पिसिदिया में था; अन्ताकिया पिसिदिया की सीमा के निकट स्थित था। [2]पृष्ठ 151 पर मानचित्र देखिए। [3]प्रेरितों 16:1, 2. पृष्ठ 152 पर ''एक नई टीम-और अधिक'' देखिए। [4]आराधनालय आरम्भ करने के लिए दस यहूदी पुरुष चाहिए होते थे। [5]आयत 9 में अनुवादित यूनानी शब्द ''बातें'' आम तौर पर, प्रचार के बजाय आम बातचीत को माना जाता है। हो सकता है कि पौलुस प्रचार कर रहा हो, या वह केवल आमने-सामने किसी को यीशु की बातें बता रहा हो और लंगड़े आदमी ने भी सुना। [6]इस आदमी के मनोदैहिक रोगी होने का प्रश्न ही नहीं था। ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में ''चंगाई की एक घटना'' में मनोदैहिक रोग पर नोट्स देखें। [7]चंगाई की इन दो घटनाओं में समानताओं के कारण, कई लोग अनुमान लगाते हैं कि यह वास्तव में एक ही घटना थी और लूका ने यह दिखाने के लिए कि पौलुस के पास भी वही शक्तियां थीं जो पतरस के पास थीं, आरम्भिक घटना की नकल की। परन्तु, यदि दोनों घटनाओं की तुलना की जाए, तो पता चलेगा कि समानताओं से अधिक इनमें भिन्नताएं हैं। यह सम्भवत: सत्य है कि लूका के उद्देश्यों में एक पौलुस की योग्यताओं की पतरस की योग्यताओं के साथ तुलना करना था, परन्तु उसने वह उद्देश्य वास्तविक घटनाओं का चयन करके पूरा किया, न कि मनघढ़ंत घटनाओं की कल्पना करके। [8]लूका ने यह नहीं कहा कि पौलुस ने उस व्यक्ति के हृदय में आत्मा में होकर झांका या उसे केवल लंगड़े आदमी का चेहरा देखकर ही पता चल गया। [9]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पाठ ''चंगाई की एक घटना'' में 3:3-5 पर नोट्स देखिए। [10]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' में ''उसके नाम से'' पाठ में 4:10, 12 पर नोट्स देखिए।

[11]पुरातत्वविज्ञानियों ने पुष्टि की है कि लुस्त्रा के लोग ज्यूस और हिरमेस की उपासना, उनके लातीनी नामों के बजाय यूनानी नामों से करते थे। [12]हिरमेस (या Mercury) को सामान्यत: उसके पांवों पर पंखों के साथ दिखाया जाता है, जैसे वह देवताओं का संदेश ला रहा हो। हिरमेस को ''देवताओं का व्याख्याकर्ता'' भी माना जाता था, अर्थात, जो मनुष्यों को बता सके कि देवताओं के कहने का क्या *अर्थ* था। ''हरमिन्यूटिक्स'' ''भाष्यशास्त्र'' को कहा जाता है (साधारणत: इसे बाइबल की व्याख्या करने के लिए प्रयुक्त होने वाला शास्त्र कहा जाता है)। [13]बरनबास के साथ तुलना से, वचन में पौलुस के चित्र से, और पौलुस के रूप के सम्बन्ध में आरम्भिक परम्पराओं में यह संकेत आता है। [14]प्रेरितों के काम पुस्तक में, बाद में हम और अन्धविश्वासी भीड़ से मिलेंगे जिसने पौलुस के विषय में यही निष्कर्ष निकाला (28:1-6)। [15]प्राचीनकाल में, सारा क्षेत्र फ्रूगिया के नाम से जाना जाता था। इस समय, लुस्त्रा का क्षेत्र गलतिया के नाम से प्रसिद्ध था। [16]ऐसे ही मन्दिर के खण्डहर प्राचीन लुस्त्रा के स्थान के निकट नगर के बिल्कुल सामने मिले हैं, जो यह संकेत देते हैं कि उस क्षेत्र के लोग ऐसा करते थे। [17]हम नहीं जानते कि ''फाटक'' नगर के फाटकों को, मन्दिर के फाटकों को, या उस घर के फाटकों को कहा गया जहां पौलुस और बरनबास ठहरे हुए थे। [18]ये हार ऊन या किसी और सामग्री के बने हुए भी हो सकते हैं। [19]अपनी यात्राओं में, मैंने प्राचीन मूर्तिपूजक वेदियों पर नक्काशी देखी है जिनमें बैलों के गले में हार डाले दिखाया गया है। [20]इनमें से एक आदमी अर्थात हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम का अध्ययन हम प्रेरितों अध्याय 12 में कर चुके हैं।

[21]प्रेरितों 13:13 के बाद यह उन बहुत कम अवसरों में से एक है, जब लूका ने पहले ''पौलुस और उसके साथी'' की बात की, जिसमें उसने बरनबास का नाम पौलुस से पहले दिया। स्पष्टत:, कारण यहां यह था कि भीड़ ने बरनबास को ज्यूस अर्थात यूनानी देवताओं का प्रधान कहकर प्राथमिकता दे दी थी। [22]आयत 4 की तरह, यहां भी अन्ताकिया की कलीसिया की ओर से भेजे जाने वालों अर्थात पौलुस और बरनबास के लिए ''प्रेरितों'' शब्द प्रयुक्त हुआ है। अध्याय 14 में केवल ये ही दो हवाले हैं जहां लूका ने उन बारह के अलावा किसी और के लिए ''प्रेरितों'' शब्द का इस्तेमाल किया। [23]बहुत से टीकाकारों का मत है कि बात ऐसी ही थी और इसे एक कारण के रूप में उद्धृत करते हैं कि लूका ने उल्लेख किया कि लोगों ने लुकाउनी भाषा में बात की। हो सकता है कि लूका ने और कारणों से इसका उल्लेख किया हो। मेरा ख्याल है कि पौलुस के पास सम्भवत: न केवल भाषाओं का दान था (1 कुरिन्थियों 14:18), बल्कि अनुवाद करने का दान भी था जिस कारण वह कोई भी भाषा समझ सकता था। [24]''फाटकों'' (आयत 13) घर के द्वारों को भी कहा जा सकता है, इसलिए कइयों का मानना है कि पौलुस और बरनबास उस घर में लौट गए जहां वे ठहरे हुए थे और भीड़ ने उन्हें वहां ढूंढ़ लिया। [25]यह प्रथा कम से कम याकूब के जितनी पुरानी है (उत्पत्ति 37:29-34)। इस प्रकार भय व्यक्त करने के एक उदाहरण के लिए, देखिए मत्ती 26:65। [26]ध्यान दें योएल 2:13। [27]देखिए प्रेरितों 10:26। [28]अभी के लिए ''सुसमाचार'' यह था कि वे मृत देवताओं को छोड़कर जीवते परमेश्वर की उपासना कर सकते थे। बाद में, पौलुस ने उन्हें यीशु का ''शुभ समाचार'' सुनाना था। [29]पुराने नियम में मूर्तियों के लिए साधारण शब्द ''व्यर्थ वस्तुएं'' था (भजन संहिता 31:6; योना 2:8)। ''व्यर्थ'' का अर्थ है ''खाली'' अथवा ''निकम्मा''। मूर्तियों की निन्दा के लिए, देखिए यशायाह 44:9-20। [30]1 थिस्सलुनीकियों 1:9।

[31]देखिए प्रेरितों 3:19। [32]देखिए प्रेरितों 17:26। [33]पिछले एक पाठ की पाद टिप्पणी में, मैंने ध्यान दिलाया था कि यदि हम पौलुस के उत्तर को शामिल करें, तो लूका ने पौलुस के पांच प्रवचन दर्ज किए। मैंने इन टिप्पणियों को उन पांच में से एक के रूप में नहीं गिना। [34]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* के बहुत से पाठक उन लोगों के बीच रहते हैं जो बाइबल को नहीं जानते। उन्हें भी, लोगों को सिखाने के लिए प्रकृति से ही आरम्भ करना चाहिए। [35]यदि सचमुच यह प्रवचन था, तो पौलुस ने सम्भवत: कालान्तर (प्रकृति) में परमेश्वर की गवाही से लेकर वर्तमान (पौलुस और अन्य जिन्होंने जी उठे प्रभु को देखा था) की गवाहियों तक बताया होगा। [36]''बैलों'' शब्द बहुवचन है, इसलिए स्पष्ट है कि वहां दो या अधिक बैल थे। [37]कई लोगों का मानना है कि लुस्त्रा के लोगों द्वारा पौलुस और बरनबास को देवता कहने और यहूदियों के वहां पहुंचने में काफ़ी समय का अन्तर है। [38]कई लोगों का अनुमान है कि ये यहूदी इकुनियुम और अन्ताकिया के व्यापारी थे जो लुस्त्रा में अनाज खरीदने आए थे, और उन्हें संयोगवश पता चला कि पौलुस और बरनबास वहां हैं। ऐसी ही परिस्थिति बाद में हम प्रेरितों 13 में देखेंगे। [39]हम यीशु के जीवन की बहुत सी समानताएं देख सकते हैं, जब भीड़ थोड़ी ही देर में उसकी प्रशंसा करती हुई क्रुद्ध हो गई (उदाहरण के लिए, लूका 4:22, 28)। उत्कृष्ट उदाहरण वह भीड़ है जो रविवार को ''होसन्ना'' के नारे लगा रही थी और शुक्रवार को ''उसे क्रूस दो!'' पुकारने लगी थी। ये घटनाएं निर्गमन 23:2 की चेतावनी की आवश्यकता को दिखाती हैं। [40]किसी कारण से बरनबास पर नहीं बल्कि पौलुस पर पथराव किया गया। पाठ में, मैं एक सम्भावित कारण का सुझाव देता हूं, परन्तु हो सकता है कि इसकी व्याख्या उससे भी आसान हो। हो सकता है कि उन्हें शाऊल तो मिल गया, परन्तु बरनबास नहीं।

[41]पथराव करना मुख्यत: किसी की हत्या करने का एक यहूदी ढंग था, इसलिए भीड़ के इस कार्य में अवश्य ही यहूदियों ने अगुआई की होगी। परन्तु, ध्यान दें, कि शाऊल को पथराव के लिए नगर से बाहर ले जाने में उन्होंने यहूदी वैधानिक संहिता की बारीकियों पर ध्यान नहीं दिया, जैसे उन्होंने स्तिफनुस के समय किया था (7:58)। [42]शायद बरनबास उनके साथ था। [43]स्पष्टत: तीमुथियुस पौलुस के द्वारा ही मसीही बना था (1 तीमुथियुस 1:2)। पौलुस के अपनी दूसरी यात्रा में पहुंचने से पहले ही तीमुथियुस एक जाना-पहचाना प्रचारक बन चुका था (16:1, 2), इसलिए अवश्य ही वह पौलुस की पहली यात्रा के समय ही मसीही

बना होगा। उसने सम्भवत: उसी समय तीमुथियुस की माता और नानी को मसीही बनाया होगा। [44]मैक्गार्वे ने अनुमान लगाया था कि उसकी आयु पन्द्रह वर्ष रही होगी। [45]द वैस्टर्न टैक्स्ट (शास्त्र का वह अनुवाद जो रोम में दूसरी से चौथी शताब्दी तक प्रयोग में लाया जाता था) संकेत देता है कि पौलुस नगर में शाम को गया। [46]यह सुझाव दिया गया है कि पौलुस रात को यूनीके के घर रहा होगा।